कमलेश्वर की कहानियों में चित्रित नारी जीवन

डॉ.श्रीकला.के.ऐ
असिस्टेंट प्रोफेसर
गवर्नमेंट विक्टोरियाकॉलेज
पालक्काड

कमलेश्वर जी नयी कहानी के प्रमुख हस्ताक्षर है। एक कहानीकार के रूप में उनकी अधिक ख्याति प्राप्त हुई है। उनकी हर एक कहानी उनके जीवनानुभवों से निकली है। समसामयिक जीवन की पीडाओं एवं संघर्ष को उन्होंने अपनी कहानियों का विषय बनाया है। अत: उनकी कहानियों में कल्पना से बढ़कर वास्तविक जीवन का यथार्थ मुखरित होता है। कमलेश्वर की कहानियों में पुरुष पात्रों की अपेक्षा नारी पात्रों की संख्या बहुत कम है। तो भी उन्होंने नारी पात्रों का चित्रण बडी सूक्ष्मता से किया है। उनकी कहानियों में समाज के विभिन्न स्तरों की स्त्रियाँ मौजूद है। कस्बे से शहर तक की स्त्रियाँ यहाँ है। उनकी अपनी यातनाएँ, मज़बूरियाँ एवं विशिष्ठताएँ हैं। उन सब का अलग व्यक्तित्व है और अलग महत्व है। ऐसे नारी पात्रों के चित्रण में कमलेश्वर ने कमाल हासिल की है।

कमलेश्वर की कहानियों में अधिकांश नारी पात्र अपने व्यक्तित्व को लेकर आयी है। वह किसी की पत्नी है। परन्तु इस रूप में वह अपनी अस्मिता और स्वतंत्र अस्तित्व को भूलती नहीं। 'राजा निरबंसिया' कहानी के नारी पात्र चन्दा पढ़ी लिखी नहीं। वह हमेशा मौन होकर पति की इच्छाओं पर चलनेवाली स्त्री थी। उसका पति है जगपति। जगपति को एक बार दूर के रिश्ते के दयाराम की शादी में जाना पडा। रास्ते में डाकुओं ने इनका आक्रमण किया। जांघ में गोली लगी। देहात के एकमात्र अस्पताल में पहूँचाया गया। आर्थिक अभाव के कारण पति को उचित इलाज न दिला सकती तो वह परेशान होती है। किसी भी तरह पति की जान बचाना अपना कर्तव्य समझती है। अत: न चाहते हुए भी कम्पाउंडर के सामने अपने को समर्पित करने का निश्चय करती है। लेकिन अपराधी भावना से उनका मन मथ जाता है। पर जगपति यह जानकर उस पर बिगड जाती है। तथा अफीम खाकर आत्महत्या करता है। चंदा एक पतिव्रता स्त्री अवश्य थी। पर आर्थिक अभाव और परिस्थिति ये दोनों ने उन्हें पतन के अगाध गर्त में गिरा दिया।

कभी-कभी विधवाएँ समाज को नकारकर सन्तानों के मोह के कारण दूसरा विवाह कर लेती है। 'नीलीझील' कहानी की विधवा पार्वती वैधव्य की अग्नि में अपनी ज़िन्दगी बरबाद नहीं करना चाहती है। वह अपने से कम उम्र वाले युवक महेशपांडे से शादी कर लेती है। उसे समाज और लोगों से कोई डर नहीं था। वैधव्य को अपनी नियती मानकर रहने को तैयार नहीं थी। वह निर्भयता उनके व्यक्तित्व का परिचायक है। -[1]"पंडिताइन फिर से सुहागिन हुई थी और इतने दिनों बाद जब उसकी माँग में सिंदूर और गोरे माथे पर पत्नीदार बालों के बीच बिंदिया चमचमाई, तो उसका रूप दुगुना हो गया।"

'खोई हुई दिशाएँ' कहानी का प्रमुख पात्र है इन्द्रा। इन्द्रा चन्दर की प्रेमिका थी। करबाई सभ्यता में पले इन्द्रा दिल्ली में आये तीन वर्ष हुए। तब उसे लगता है कि उसकी ज़िन्दगी यंत्रवत हो गयी है । क्योंकि महानगर में सब कहीं बनावट ही बनावट है। महानगर के बनावटी वातावरण में उसे अकेलापन महसूस होता है। भीड में वह अपने को अकेला पाता है। नौकर पर विश्वास न करनेवाला मालिक, पडोस में रहते हुए भी अपरिचित पडोसी, अपना काम निभाने केलिए परिचय का बहाना करनेवाले लोग सब के बीच में चन्दर अपने को अकेला पाता है। प्रेमी इन्द्रा भी चन्दर के साथ अजनबी के समान व्यवहार करती है। इन्द्रा चन्दर के स्वभाव से अत्यंत परिचित थी। फिर भी वह पूछती है कि चाय में कितनी चीनी डालती है। चन्दर ने सोचा कि दो चमच वाली बात सुनकर वह कहेंगा कि दो चमच चीनी से गला खराब हो जाएगा। पर इन्द्रा ने दो चमच चीनी डालकर चन्दर को दिया। इन्द्रा के बातचीत में भी एक प्रकार की मेहमान बाजी की बू आ रही थी। वह दहर के समान चाय पीता रहा। चन्दर चाहता था कि किसी भी तरह इन्द्रा के पास से भाग जाएँ।

'इसके सिवा' नौकरी पेशा नारी की बदली मानसिकता सुजाता के माध्यम से आधुनिक युवा की अधेड, खूबसूरत विधवा की मानसिक अवस्था ममी के द्वारा, पारीवारिक ज़िम्मेदारियों में फँसकर पिसती नारी की अवस्था बयान की स्त्री के माध्यम से उकेरा है। इस तरह कमलेश्वरजी की कहानियों के अधिकांश पात्र भारतीय आदर्शों के अनुकूल है। उनके विदेशीपात्र भी भारतीय नारी की टंग में टंगे हुए हैं। पर सच्चाई यह है कि परिवेश इन सब को प्रभावित करती है।

संदर्भ सूची

1. कमलेश्वर- नीलीझील -(मेरी प्रिय कहानियाँ) -पृष्ठ.सं : 88